KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna - 6
Mob. : 8877918018, 8757354880

Time : 07 to 08 am

HISTORY

By : Khan Sir
(मानचित्र विशेषज्ञ)

अवध राज्य :

- अवध के स्थापक सहादत खान थे। इन्होंने अवध की स्थापना 1722 ई. में मुगलो से अलग होकर किया ।
- इन्होंने अपनी राजधानी लखनऊ को बनाया।
- अवध के राजाओं को नबाब कहा जाता था।
- सहादत खान के समय 1739 ई. में इरान तथा एशिया का नेपोलियन कहा जाने वाला नादिर शाह ने अवध पर अक्रमण कर दिया । किन्तु अवध धन दौलत से कंगाल था। अत: सहादत खान ने नादिर शााह को दिल्ली पर आक्रमण के लिए उकसा दिया। जब नादिर शाह दिल्ली को लूटने के बाद वापस सहादत खां के पास कुछ धन देने के लिए आया तो उनके डर से शहादत खान ने आत्महत्या कर लिया।
- इसके मृत्यु के बाद उसके पुत्र सफदर जंग तथा सुजाउद्दौला के बीच उत्तराधिकार के लिए युद्ध हुआ और सुजाउद्दौला विजय हुआ और नबाब बना। सुजाउद्दौला 1764 के बक्सर के युद्ध में तिलगुट सेना में भाग लिया और पराजित हो गया।
- 1801 ई॰ में अवध ने लॉर्ड वेलेजली द्वारा प्रारंभ की गयी सहायक संधी का स्वीकार कर लिया।
- अवध के अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह थे जिनको अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया और अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर उसे अंग्रेजी क्षेत्र में मिला लिया और वाजिद अली शाह को कैद कर लिया जहाँ उनकी मृत्यु हो गई। यही कारण था कि वाजिद अली शाह की पत्नी वेगम हजरत मजल ने 1857 के विद्रोह में भारतीय सैनिकों का अवध से नेतृत्व किया।
- विद्रोह समाप्त होने के बाद बेगम हजरत महल नेपाल चली गयी जहां उनकी मृत्यु हो गयी।

हैदराबाद :

- स्वतन्त्र हैदराबाद की स्थापना 1724 ई॰ में निजाम-उल मुल्क ने मुगल बादशाह मो॰ शाह के समय किया।
  यहाँ के राजा को निजाम कहाँ जाता था।
- 1728 ई॰ में मराठा पेशवा बाजीराव-I ने हैदराबाद पर आक्रमण किया और पालखेड़ा के युद्ध में निजाम को पराजित कर दिया।
- पेशवा तथा निजाम के बीच मुंशी शिवगांव की संधी हुयी इस संधि के तहत निजाम ने मराठों की अधीनता स्वीकार की और चौथ तथा सरदेशमुखी नामक कर देने लगा। जब 1798 ई. में लार्ड वेलेजली ने सहायक संधी प्रारम्भ किया तो उसे मनाने वाला पहला राज्य हैदराबाद था।
- स्वतन्त्रता के बाद हैदराबाद (तेलंगाना वाला क्षेत्र) पाकिस्तान में मिलने की इच्छा जतायी। किन्तु सरदार पटेल ने Opration polo नामक पुलिस कार्यवाही से हैदराबाद को भारत में मिला लिया।

कर्नाटक :

- कर्नाटक की स्थापना सादुतुल्ला ने किया। कर्नाटक पर अधिकार करने के लिए फ्रांसिस तथा अंग्रेज आपस में लड़ गए और 3 युद्ध हुआ।

प्रथम आंग्ल कर्नाटक युद्ध (1746–48)

- इस युद्ध का कारण ऑस्ट्रिया के अधिकार को लेकर इंग्लैड तथा फ्रांस के बीच युद्ध हुआ। जिस कारण उनकी कम्पनीयां भारत में युद्ध कर ली। ऑस्ट्रिया का उत्तराधिकार का युद्ध एलाशापा की संधि से समाप्त हुआ। इसी संधि के तहत भारत में प्रथम आंग्ल कर्नाटक युद्ध समाप्त हो गया।

द्वितीय आंग्ल कर्नाटक युद्ध (1749–54)

- इस युद्ध का कारण फ्रांसिस गर्वनर डुप्ले का महात्वाकांक्षी होना था। इसने भारत में अग्रेंजो पर आक्रमण कर दिया। यह युद्ध पाण्डीचेरी के संधि के तहत समाप्त हुआ।

तृतीय आंग्ल कर्नाटक युद्ध (1763)

- इस युद्ध का कारण यूरोप में चल रहे सात वर्षीय युद्ध को माना जाता है। यह युद्ध इंग्लैण्ड तथा फ्रांस के बीच मुख्य रूप से हुआ। इसी युद्ध के दौरान 1760 में वांडीवास के युद्ध में अंग्रेजों में फ्रांसीसियों को बूरी तरह पराजित कर दिया और भारत से फ्रांसीसि सत्ता लगभग समाप्त हो गयी। यह युद्ध 1763 में पेरिस के संधि के तहत समाप्त हो गयी। इस संधि के तहत चन्द्र नगर तथा पाण्डीचेरी पर फ्रांसिसियों का अधिक रहा शेष क्षेत्र पर अंग्रेंजो ने कब्जा कर लिया।
  पाण्डीचेरी की स्थापना फ्रांसिस मार्टिन ने किया था। जो 1954 में भारत का अंग बना।

मैसूर राज्य :

- मैसूर राज्य की स्थापना हैदर अली ने 1755 ई॰ में किया। हैदर अली एक योग्य शासक था इसने अपने साम्राज्य का विस्तार प्रारम्भ किया और यही अंग्रेजों तथा मैसूर के बीच युद्ध का कारण बना।

☞ अंग्रेजों तथा मैसूरों के बीच युद्ध लड़े गए।

- **प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध (1767–69) :** हैदर अली ने अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव को दबाने के लिए अंग्रेजों के साथ यह युद्ध किया था। युद्ध में हैदर अली विजयी रहा और यह युद्ध मद्रास की संधि से समाप्त हुआ।
- मद्रास की संधि की सारी शर्ते हैदरअली ने तय किया था। यही कारण है कि यह संधि सफल नहीं हो सकी और द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध को जन्म दे दिया।

- **द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1780–84) :** इस युद्ध का कारण अंग्रेजों द्वारा हैदर अली का क्षेत्र माहे (पाण्डीचेरी) पर अधिकार करना था।
- इस युद्ध में हैदरअली मारा गया और उसका बेटा टिपु सुल्तान युद्ध को आगे बढ़ाया। यह युद्ध बिना किसी निर्णय मंगलौर की संधि से समाप्त हो गया।
- **तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1790–92) :** यह युद्ध टिपु सुल्तान ने लड़ा किन्तु इस युद्ध में टिपु सुल्तान पराजित हो गया और यह युद्ध श्रीरंगपट्टनम की संधि से समाप्त हो गया।
- **चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध (1799) :** इस युद्ध में टिपु सुल्तान मारा गया और मैसूर क्षेत्र पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

संधि का Trick : -

महा	**मंगल**	**श्री**
1	**2**	**3**

- टिपु सुल्तान ने फ्रांसिसियों के सहयोग से एक नव सेना का गठन किया और फ्रांस के जैकोबीयन कल्ब (फ्रांस का गरम दल) की सदस्यता ग्रहण की।
- टिपू सुल्तान एक धार्मिक उदार शासक था। इसने शंकराचार्य द्वारा बनवाए गये सिगेर पीठ जो की मैसूर में स्थित है का पुर्ननिर्माण करवाया।
- टिपू सुल्तान की अंगूठी पर राम लिखा था। टिपू सुल्तान के तोपों का आकार शेर की तरह था।
- टिपू सुल्तान कहता था कि '100 दिन के गिदड़ के जीवन से अच्छा है कि एक दिन के शेर का जीवन'।

पंजाब राज्य :

- इसकी स्थापना सुकरचकिया मिसल के राजा रणजीत सिंह ने किया।
- इसके समय 1795–99 तक अफगानिस्तान के शासक अहमद शाह अब्दाली का पौत्र जमान शाह-I ने पश्चिमोत्तर भारत पर हमला किया। इस हमले के दौरान जमान शाह के कुछ तोप चिनाब नदी में गिर गये थे। जिसे राजा रणजीत सिंह ने वापस जमान शाह को दे दिया।
- राजा रणजित सिंह के इस उदारता से जमान शाह प्रसन्न हुआ और लाहौर को उपहार में दे दिया।
- राजा रणजीत सिंह ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया। राजा रणजीत सिंह ने स्वर्ण मन्दिर पर सोने की चादर चढ़ायी।
- 1809 ई॰ में रणजीत सिंह तथा चार्ल्स मेटकाफ के बीच अमृतसर की संधि हुई। इस संधि के तहत सतलज नदी को अंग्रेजों तथा पंजाब राज्य के बीच सीमा मान लिया गया।
- इस संधि का उद्देश्य रणजीत सिंह के साम्राज्य विस्तार पर रोक लगाना था।
- 1839 ई॰ में राजा रणजीत सिंह की मृत्यु हो गयी।
- अगला शासक खडक सिंह बना। खड़क सिंह ने अपना वजीर (PM) ध्यानचन्द को बनाया।
- ध्यानचंद एक बोलेबाज व्यक्ति था उसने अगले ही वर्ष 1840 में खड़क सिंह की हत्या कर दी।
- अगला शासक नैनीहाल बना। इसने भी अपना वजीर ध्यानचन्द्र को ही बनाया। ध्यानचन्द्र ने इसकी भी हत्या 1844 में कर दी।
- इसके बाद अगला शासक शेरसिंह बना किन्तु शेर सिंह की 1844 ई. में मृत्यु हो गयी और इनका अल्पायु पुत्र दिलीप सिंह अगला शासक बना।
- अंग्रेजों ने पंजाब पर अधिकार के लिए दो-दो युद्ध लड़े।
- **प्रथम आंग्ल पंजाब युद्ध (1845–46) :** इस युद्ध में अंग्रेज विजय हुए। यह युद्ध भोरेवाल की संधि के तहत समाप्त हुआ।
- **द्वितीय आंग्ल पंजाब युद्ध (1846–49) :** इस युद्ध का कारण लार्ड डलहौजी की राज्य हड़पनीति थी। लार्ड डलहौजी ने पंजाब पर अधिकार के लिए चार्ल्स नेपियर नामक एक कुशल सेनापति भेजा था। यह चार्ल्स नेपियर युद्ध में विजय रहा और पंजाब पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। लार्ड डलहौजी कोहेनूर हीरा पंजाब राज्य से लेकर England की रानी को भेज दिया।
- राजा रणजीत सिंह का अल्पायु पुत्र दिलीप सिंह को अंग्रेजों ने अच्छी शिक्षा के लिए लंदन भेज दिया और उसकी माता को 48000 रु॰ प्रति वर्ष पेंशन देकर शेखपुरा (J & K) में भेज दिया।
- इस प्रकार पंजाब पूरी तरह अंग्रेजों के अधीन हो गया।

कोहिनुर हीरा :

- यह हैदराबाद के समीप गोलकुण्डा के खान से निकला था तथा वारंगल के शासक प्रतापरुद्र देव के पास था जिससे मलिकाफुर ने छीन कर अलाउद्दीन खिलजी को दे दिया।
- खिलजी वंश के बाद यह हीरा तुगलकवंश को चला गया।
- तुगलक वंश से यह सैयद वंश और उसके बाद लोदी वंश में चला गया। लोदी वंश से यह मालवा के शासक के पास गया जिससे मुगलों ने छीन लिया।
- मुगल बादशाह मुहम्मद शाह से नादिर शाह ने छिन लिया और ईरान लेकर चला गया किन्तु पश्तुन दुरानियों ने नादिर शाह से कोहिनुर हीरा छीन लिया।
- पश्तुन दुरानी से पंजाब के सिख शासकों ने कोहिनुर हीरा छीन लिया।
- लॉर्ड डलहौजी ने पंजाब के सिख शासकों से कोहिनुर हीरा लेकर महारानी विक्टोरिया के पास भेजा दिया।
- नीले रंग का यह कोहिनुर हीरा आज भी विक्टोरिया के ताज में है।

गोलकुण्डा → वारंगल → खिलजी → तुगलक → सैयद → लोदी → ↓

सिख ← पश्तुन दुरानी ← नादिर शाह ← मुगल ← मालवा

└ डलहौजी → Victoria

बंगाल :

- बंगाल राज्य की स्थापना मुर्शीद कुली खान ने किया। इन्होंने अपनी राजधानी मुर्शीदाबाद को बनाया।
- इनकी मृत्यु 1727 ई. में हो गयी।
- सुजाउद्दीन अगला शासक बना किन्तु 1739 ई. में उनकी मृत्यु हो गयी।

- अलीवर्दी खान अगला नबाब बना। 1756 ई. में इसकी मृत्यु हो गयी।
- सिराजुद्दौला अगला शासक बना। सिराजुद्दौला का अपने ही परिवार में घसीटी बेगम से विवाद था। साथ ही साथ अपने पड़ोसी राजवल्लभाचार्य से भी विवाद था। इसी विवाद का फायदा उठाकर अंग्रेजों ने बंगाल के क्षेत्र में किला बनवाना प्रारम्भ किया। इस फोर्ट विलियम किला का प्रधान अधिकारी रोजर ड्रैक था।
- सिराजुद्दौला ने अचानक किला पर हमला कर दिया और वहाँ से 146 लोगों को पकड़ के कलकत्ता के चन्द नगर नामक स्थान पर एक छोटे से घर में कैद कर दिया जिसमें 123 लोगों की मृत्यु हो गयी। और मात्र 23 ही जीवित बचे। इस घटना को कालकोठरी (Black Hall) के घटना के नाम से जाना जाता है। इस घटना की जानकारी इतिहासकार हार्नबेल ने दिया। क्योंकि वह भी इसी 146 लोगों में से थे जो कैद किए गए थे।
- सिराजुद्दौला को हराने के लिए मद्रास का गर्वनर लार्ड क्लाईव बंगाल आया और उसने सिराजुद्दौला के सेनापति मीर जाफर तथा कोषाध्यक्ष (वित्तमंत्री) राय दुर्लभ को मिला लिया।
- 23 June 1757 को पं. बंगाल राज्य में हुगली नदी के किनारे प्लासी नामक स्थान पर प्लासी का युद्ध हुआ। इस युद्ध में सिराजुद्दौला मीर जाफर के कहने पर युद्ध से पहले ही लौट रहा था। जिसकी रास्ते में हत्या कर दी गयी। और युद्ध के मैदान में मीर जाफर चुपचाप अंग्रेज का साथ देता रहा और अंग्रेज जीत गए।
- पूर्व शर्त्त के अनुसार मीर जाफ़र को बंगाल का नवाब बना दिया।
- अंग्रेजों ने मीर जाफ़र से धन लेना प्रारम्भ किया मीर जाफ़र ने भी उन्हें अत्यधिक धन दिया किन्तु धन जब समाप्त होने लगा तो मीर जाफ़र धन देने से कतराने लगा। इसी कारण अंग्रजों ने मीर जाफ़र को हटाकर मीर काशिम को बंगाल का नवाब बना दिया। इससे बंगाल का प्रथम शांतिपूर्ण क्रांति कहते हैं।

दस्त प्रणाली :

- दस्त एक प्रकार का शाही फरमान (राजा) जिस अंग्रेज के पास दस्तक होता था। उसे बंगाल के क्षेत्र में 'कर' में छूट दिया जाता था।
- अंग्रेजों ने इस दस्तक प्रणाली का दुरुपयोग प्रारम्भ किया। जिस कारण मीर काशिम ने दस्तक प्रणाली को ही समाप्त कर दिया। इसी कारण अंग्रेज मीर काशिम का विरोध करना प्रारम्भ किया।
- मीर काशिम ने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से बिहार के मुंगेर लाया और मुंगेर में गोला बारुद का कारखाना खोला।
- अंग्रेजों को मीर काशिम की यह नीति पसंद नहीं आयी और अंग्रेजों ने मीर काशिम को हटाकर मीर जाफर को पुन: बंगाल का नवाब बना दिया।

बक्सर का युद्ध (1764)

- बंगाल का अपदस्त नवाब (हटाया गया) ने अब वहाँ के नवाब सुजाउद्दौला तथा दिल्ली में मुगल बादशाह शाह आलम-II के साथ मलकर एक तिलगुट (तीन गुटों वाली सेना) सेना का गठन किया। इस सेना का नेतृत्व शाह आलम -II कर रहा था। तिलगुट सेना का सामना बिहार के बक्सर में अंग्रेजों से हुआ। अंग्रेज सेना का नेतृत्व एक कुशल सेनापति हेक्टर मुनरो कर रहा था।
- इस युद्ध में तीगुट सेना पराजित हुई और अंग्रेज विजय हो गए। 1765 ई. में अंग्रेजों ने शाहआलम -II के साथ इलाहाबाद की संधि किया। इस संधि के तहत शाहआलम -II ने बिहार, बंगाल तथा उड़ीसा की दीवानी राजस्व (Tax) अंग्रेजों को सौंप दी। इस पकार बंगाल के क्षेत्र में द्वैध शासन प्रारम्भ हो गया। इस समय कम्पनी का गर्वनर लार्ड राबर्ट क्लाईव था।
- लार्ड क्लाईव को भारत में द्वैध शासन का जनक कहते हैं। बंगाल का अंतिम नवाब मुबारक शाह था। इसके बाद बंगाल पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

भारत में यूरोपिय कम्पनियां

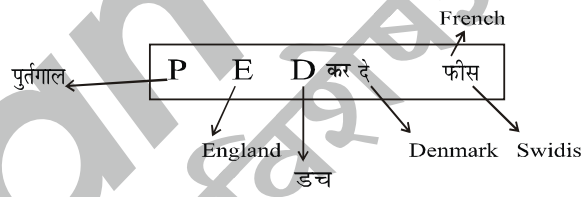

- **पुर्त्तगाल इस्ट इंडिया कम्पनी:** इसकी स्थापना 1498 ई. में हुई।
- **ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनी :** इसकी स्थापना 31 Dec, 1600 को हुई।
- **डच इस्ट इंडिया कम्पनी :** इसकी स्थापना 1602 ई. में हुई।
- **डेनमार्क इस्ट इंडिया कम्पनी :** इसकी स्थापना 1616 ई. में हुई।
- **फ्रेंच इस्ट इंडिया कम्पनी :** इसकी स्थापना 1664 ई. में हुई।
- **स्वीडीस ईस्ट इंडिया कम्पनी :** इसकी स्थापना 1731 ई. में हुई।

☞ पुर्त्तगाल इस्ट इंडिया कम्पनी :

- इसकी स्थापना 1498 में हुई। 17 May 1498 की पुर्त्तगाली नाविक वास्कोडिगामा केरल के कालीकट बन्दरगाह पर पहुंचा। वहाँ के शासक जमोरिन ने उसका बहुत स्वागत किया और उसकी जहाज को मशालों से भर दिया। इन मसालों के अतिरिक्त वास्कोडिगामा कुछ और ली मसाले खरीदे थे जिसे वह यूरोप में बेच कर 60 गुना मुनाफा कमाया।
- 1502 ई. में वास्कोडिगामा पुन: भारत आया।
- 1503 ई. में पुर्तगालियों ने कोची का किला जीत लिया।
- 1505 ई. में पुर्तगाल ने फ्रांसिस-डी-अल्मोडा को गवर्नर नियुक्त किया। अल्मोड़ा नवसेना को मजबूत करने के लिए Blue Water Policy को अपनाया । किन्तु यह वास्तविक रूप से गवर्नर के पद को नहीं सम्भाल सका और इसके स्थान पर 1509 ई. में अल्बुकर्क को पुर्तगाली गवर्नर नियुक्त किया गया।

By - Khan Sir मानचित्र विशेषज्ञ

- अल्बुकर्क को ही पुर्तगाल का वास्तविक गवर्नर कहते हैं। इसने विजापुर के शासक से गोवा जीत लिया।
- इसका विजय नगर शासक कृष्ण देव राय के साथ अच्छा संबंध था।
- अल्बूर्क ने पुर्तगालियों की संख्या बढ़ाने के लिए पुर्तगालियों को भारतीय महिलाओं से शादी करने के लिए प्रेरित किया।
- पुर्तगाली सबसे पहले भारत आए थे और सबसे बाद में भारत छोड़कर गए (1961)
- पुर्तगाली ने ही भारत में सर्वप्रथम तम्बाकू तथा आलू की खेती प्रारम्भ करायी।
- पुर्तगालियों ने ही भारत में सर्वप्रथम 1556 ई. में गोवा में प्रिंटिग प्रेस की स्थापना किया।
- पुर्तगाली भारत से अधिक इण्डोनेशिया से व्यापार करने में रूचि रखते थे।

☞ डच ईस्ट इंडिया कम्पनी (1602) :

- डच ने 1605 ई. में मछलीपट्टम में अपनी व्यापारिक कोठी स्थापित की। इन्होंने पुलीकिट में अपनी दूसरी व्यापारिक कोठी स्थापित की। इन्होंने सूरत में अपनी तीसरी व्यापारिक कोठी स्थापित की।
- 1759 के वेदरा के युद्ध में अंग्रेजों ने डचो को पूरी तरह पराजित कर दिया और उनके सभी व्यापारिक कोठियों पर अधिकार कर लिया।
- **डेनिस इस्ट इंडिया कम्पनी (1616):** इन्होंने अपनी व्यापारिक कोठी केरल के त्रावणकोर में स्थापित किया। दूसरी व्यापारिक कोठी बंगाल के रामपुर में स्थापित किया।
- डेनिस के व्यापारिक कोठियों का विस्तार अधिक नहीं था। अत: 1545 ई. में डेनमार्क ने अपनी सभी कोठियों को अंग्रेजों के हाथ बेच दिया।

☞ फ्रांसीसी इस्ट इंडिया :-

- इसकी स्थापना 1664 ई. में राजा लूई - 14वां के समय हुई थी।
- फ्रांसीसी ने अपनी पहली व्यापारिक कोठी 1669 ई. में सूरत में खोली।
- फ्रांसीसियों ने अपनी दूसरी व्यापारिक कोठी मछलीपटनम् में खोली।
- फ्रांसीसियों ने विजापुर के शासक से आज्ञा लेकर 1673 में पाण्डिचेरी शहर की स्थापना की।
- पाण्डिचेरी की स्थापना फ्रांसिस मार्टिन ने किया।
- फ्रांसिस गवर्नर डूप्ले 1742 ई. में भारत में फ्रांस का गवर्नर बना।
- इसी के समय कर्नाटक युद्ध हुआ।
- 1760 ई. में वॉडीवास के युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसिसियों को पूरी तरह से पराजित कर दिया।
- फ्रांसियों का भारत के अधिक क्षेत्रों पर अधिकार नहीं था किन्तु वे आजादी के बाद तक भारत में रहे और 1956 ई. में भारत छोड़कर गये।
- **स्वीडीस इस्ट इंडिया कम्पनी (1731) :-** ये अपना अधिक विस्तार नहीं कर सका और भारत से चले गये।

☞ ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनी :-

- इसकी स्थापना 31 दिसम्बर, 1600 को महारानी एलिजाबेथ ने किया।
- जिस समय ब्रिटिश इस्ट इंडिया की स्थापना हुई इस समय मुगल गद्दी पर अकबर था।
- 1639 ई. में ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनी ने मद्रास को भाड़े पर ले लिया और यहाँ फोर्ट सेण्ट जार्ज का किला बनवाया।
- 1651 ई. में अंग्रेजों ने बंगाल के हुबली में अपनी व्यापारी कोठी खोली।
- 1661 ई. में ब्रिटिश राजकुमार चार्ल्स -II का विवाह पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से हो गया और पुर्तगालियों ने बम्बई बन्दरगाह को अंग्रेजों को दे दिया।
- चार्ल्स -II ने बम्बई बंदरगाह को ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनी को भाड़े पर दे दिया।
- 1698 ई. में कलकत्ता में फोर्ट विलियम किला का निर्माण प्रारम्भ किया।
- **Remark :-** कलकत्ता शहर की स्थापना जॉन चरनाक ने किया था।
- 1717 ई. में फरूखशियर ने अंग्रेजों को व्यापारिक छूट दे दिया। इसे अंग्रेजी सम्राज्य का मैग्नाकार्टा कहा जाता है।
- 1757 ई. में प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजों ने बंगाल के क्षेत्र पर अप्रत्यक्ष रूप से शासन करने लगे। यह युद्ध अंग्रेजों को बंगाल में पैर जमाने का मौका मिला गया।
- 1764 के बक्सर के युद्ध के बाद 12 Aug 1765 को अंग्रेजों एवं शाहआलम -II के बीच इलाहाबाद की संधि हुई।
- इस संधि के तहत अंग्रेजों ने बंगाल के क्षेत्र में द्वैध शासन लगा दिया।
- बक्सर के युद्ध ने अंग्रेजों ने भारत में पैर जमाने का मौका दे दिया।
- 1759 ई. में अंग्रेजों ने वेदरा के युद्ध में डचों को पराजित कर दिया।
- 1760 ई. में अंग्रेजों में वाण्डीवास के युद्ध में फ्रांसिसियों को पराजित कर दिया।
- इस प्रकार भारत में अंग्रेजों का विरोध करने वाली कोई बड़ी शक्ति नहीं बची।
- BEIC (ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनी) धीरे-धीरे मजबूत होने लगी किन्तु भ्रष्टाचार बढ़ गया था। और राजा का नियंत्रण भी कम्पनी पर कमजोर पड़ रहा था।

☞ कम्पनी के अधीन गवर्नर जनरल :-

- बंगाल का पहला गवर्नर लार्ड क्लाईव था जिसने द्वैध शासन (1765) में लागू किया।
- वारेनहेस्टिंग्स (1772 - 1785) : इसके समय 1773 का रेगुलेटिंग एक्ट पारित हुआ।

By - Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)